IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

Impact Factor: 5.731

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Volume 6, Issue 5, May 2026

सैन्धव सभ्यता में वृक्ष पूजा : एक अध्ययन

डॉ. प्रदीप सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग

टी. डी. पी. जी. कालेज, जौनपुर (उ0प्र0)

सैन्धव सभ्यता का प्रथम पुरास्थल हड़प्पा था जिसके आधार पर इसका नाम हड़प्पा सभ्यता किया गया था।[1] सैन्धव सभ्यता सिन्धु नदी घाटी तक सीमित नहीं है लेकिन सैन्धव सभ्यता के क्षेत्र के अन्तर्गत बलूचिस्तान, पश्चिम उत्तर सीमा प्रान्त, पंजाब, सिंधु, काठियावाड़ का भाग, राजपूताना एवं गंगा घाटी का उत्तरी भाग तक फैला है। सैन्धव सभ्यता के प्रमुख केन्द्रों में दरबार–कोट, पेरियानो, राना घुण्डई, कुल्ली, मेही, चन्हूदड़ो, आमरी, मोहनजोदड़ो, अलीमुराद, रोपड़, रंगपुर, अतरंजीखेड़ा, सुत्कागेण्डोर उल्लेखनीय हैं। हड़प्पा कालीन संस्कृति नगरीय एवं व्यापार पर आधारित थी। हड़प्पा संस्कृति के निर्माण में अनेक जातियों के लोगों का योगदान प्रमुख था, जैसे– काकेशियन, भूमध्यसागरीय, मंगोलियन एवं अल्पाइन इत्यादि। हड़प्पा कालीन संस्कृति में बहुदेववादी धार्मिक दृष्टिकोण देखा गया। सैन्धव सभ्यता के लोग जल, मातृ देवी, पशुपति देव, नाग तथा शक्ति की उपासना में विश्वास करते थे।[2] सैन्धव सभ्यता के लोगों का ताबीज तथा जादू–टोने पर विश्वास था।[3] सर जॉन मार्शल ने मोहनजोदड़ों में लकड़ी के मंदिर प्राप्त होने की सम्भावना प्रतीत की है।[4] इससे पता चलता है कि सैन्धव सभ्यता के लोगों का वृक्ष पूजा में विश्वास था।[5] पुरातात्विक उत्खनन के आधार पर हड़प्पा कालीन संस्कृति में वृक्ष पूजा के दो स्वरूप देखने को मिलते है।

1. वृक्ष की तद्रूपेण उपासना।
2. वृक्ष की देवता के रूप में उपासना।

वृक्ष की तद्रूपेण विधि में साक्षात वृक्षों की पूजा की जाती थी। हड़प्पा काल में अनेक मुद्राओं पर वृक्षों का अंकन देखने को मिलता है, जिसकी पहचान करने में कठिनाई होती है लेकिन अधिकांश वृक्ष परिचित से लगते है। यहां के वेष्ठिनी के भीतर स्थित बबूल के वृक्ष का चित्रण साधारण मिट्टी की पट्टियों एवं चीनी मिट्टी की पट्टियों पर देखने को मिलता है। यही पर एक मुद्रा पर छः पीपल की पत्तियों का चित्रांकन है। हड़प्पा काल के लोग खजूर–द्रुम से परिचित थे। खजूर–द्रुम के वृक्ष अनेक मृत्पात्रों पर दिखाई पड़ता है। चन्हूदड़ों से भी मृत्पात्रों पर वृक्ष का चित्रांकन है एवं पीपल की पत्तियां पहचानी जा सकती है।[6] कई मुद्राओं पर केले के पत्तियां चित्रित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि केले का वृक्ष पवित्र माना जाता था। मोहनजोदड़ों से प्राप्त कुछ मुद्राओं पर बबूल के वृक्ष का चित्रण है।[7] कहीं–कहीं शीशम और शिरीष के पत्तों का अंकन है। वृक्षों के सभी चित्रांकन पूजा पद्धति प्रतीत होते हैं वृक्ष की उपासना एवं पवित्रता का संकेत मुहरों की वेदिका निर्गत वृक्षों के अंकन पर आधारित है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मुद्रा पर किये गये चित्रांकन से ज्ञात होता है कि वृक्ष को देवता के रूप में पूजा करते थे। मोहनजोदड़ों से प्राप्त इस मुद्रा में जमीन से उत्पन्न एक वृक्ष से दो टहनियां निकल रही है। इन टहनियों के बीच त्रिशूल सदृश शिरोभूषा एवं बाजुबन्द पहने हुए एक नग्न आकृति खड़ी है। इसके समीप श्रृंगधारी दूसरी आकृति झुकी हुई दिखायी देती है। इसके बाल लम्बे है एवं सिर पर श्रृंगों के बीच पत्र–निर्गत मुकुट जड़ा है। सबसे नीचे सात आकृतियां शीर्ष पर मुड़ी हुई ऊँची

चोटी धारण किये हुए दर्शाया गया है। सर जॉन मार्शल के अनुसार वृक्ष की टहनियां पीपल की है एवं नग्नधारी वृक्ष की है। अन्य आकृतियां देवी–दूत की है।[8] डॉ0 राधाकुमुद मुखर्जी के अनुसार यह चित्रांकन वृक्ष के अधिदेवता का है।[9] माधवस्वरूप वत्स को हड़प्पा से एक मुद्रा मिट्टी की प्राप्त हुई है, जिस पर बाजूबन्द से भरे हुए हाथ वाली एक आकृति जो कि पीपल वृक्ष की टहनी से बने मेहराब के नीचे प्रदर्शित है।[10] मोहनजोदड़ों से एक मुद्रा प्राप्त हुई है, जिसमें दो जुड़वा एक श्रृंगी पशुओं के सिरों से पीपल वृक्ष की नौ पत्तियां निकलती हुई देखने को मिलती है। वृक्ष के अधिदेवता की पूजा के विषय में मिट्टी की एक ताबीज पर पकड़े हुए है। काला महोदय ने अनुमान लगाया है कि ये वृक्ष इस आकृति के सम्मान में गाड़े गये है।[11] काला महोदय की दूसरी संभावना यह है कि यह चित्र वृक्ष–पाणिग्रहण का सूचक हो सकता है।[12] वृक्ष पूजा और वृक्ष के अधिदेवता की पूजा विधि में बलि देने की रीति–रिवाज था। वृक्ष की टहनी के नीचे एक मुद्रा में देवी खड़ी है। उनके निकट हाथ जोड़े एक मनुष्य घुटने के बल पर झुका बैठा है। एक बड़े आकार का बकरा खड़ा है। यह बकरा बलि देने के लिए देवी के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा था।[13] मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मुद्रा पर बकरा का चित्रांकन है। इसमें एक उपासक जो कि पुजारी हैं। करबद्ध मुद्रा में वृक्ष देवता के समीप बैठा है, उसके पीछे बलि पशु है नीचे की तरफ सात भक्त खड़े है।[14] यहां पर पशुबलि वृक्ष देवता के सम्मान में अर्पित किया जा रहा है। सैन्धव सभ्यता में पीपल वृक्ष को श्रद्धा, सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त थी। पीपल वृक्ष की टहनियों को पुरोहित और देवता द्वारा सिर पर किरीट रूप में धारण करने के प्रमाण मिलते है।[15] के0एन0 शास्त्री के अनुसार पीपल को सैन्धव सभ्यता में सबसे उच्च देवता का निवास स्थान माना जाता था, इसलिए इसे पवित्र एवं पूज्यनीय था एवं निम्न श्रेणी के देवताओं के श्रृंगार शिरोवस्त्र को कलंगी के रूप में धारण किया जाता था।[16] सैन्धव सभ्यता में पीपल वृक्ष की पवित्रता का कारण स्पष्ट करते हुए के0एन0 शास्त्री ने इसको सृष्टि एवं ज्ञान के वृक्ष के रूप में प्रतिष्ठित स्वीकार किया है[17] के0एन0 शास्त्री के अनुसार अपने शीर्ष पर इसकी लघु शाखाएं धारण करते थे एवं यह ज्ञान प्रदान करता था। लेकिन यह विशेषाधिकार पुजारी एवं देवता को ही प्राप्त था, जिससे मनुष्यों के भाग्य का नियंता समझा जाता था।[18] सैन्धव सभ्यता के व्यक्ति पीपल की लकड़ी से बनी ताबीज भी धारण करते थे।[19] वृक्ष पूजा के संदर्भ में के0एन0 शास्त्री ने कहा है कि मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा पर चित्रांकन अत्यधिक रोचक है। इसमें वेदी से एक पीपल प्रस्फुटित है, जो एकश्रृंगी दो अश्वों द्वारा रक्षित है। मैत्रायणी संहिताकार ने इस चित्रांकन के पीछे स्पष्ट किया है कि अश्व से पीपल वृक्ष का प्रकटन हुआ।[20] सैन्धव सभ्यता के बारे में के0एन0 शास्त्री पीपल के वृक्ष की पूजा को सूर्य देवता से सम्बद्ध मानते है।[21] एक मुद्रा में एक देवी को पीपल निर्मित तोरण के नीचे खड़े हुए दिखाया गया है और पीपल की पत्तियाँ सूर्य की रश्मियों की तरह दिखाई गयी है। एक मृद्भाण्ड चन्हूदड़ों से मिला जो सूर्यमण्डल दर्शाया गया है, जिसकी रश्मियां पीपल की पत्तियों के रूप में बाहर की तरफ निकलती हुई प्रदर्शित हुई है।[22] एक मुद्रा पर मोरों को पीपल की शाखाओं पर बैठे हुए प्रदर्शित किया गया है। वह उन पर चिपकने वाले कीड़े–मकोड़ों के विष–उन्मूलन का प्रयत्न कर रहे है।[23] मोर को सूर्य से सम्बन्धित माना गया है क्योंकि सूर्य के बिम्ब एवं मोरपंख में अनोखा सदृश्य है। पीपल की शाखाओं पर मोर के बैठने के आधार पर पीपल और सूर्य का सम्बन्ध निरूपित कर सकते है। इससे यह संभावना प्रबल होती है कि सैन्धव सभ्यता में सूर्य की पूजा और वृक्ष की पूजा एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध था। के0एन0 शास्त्री के अनुसार सैन्धव सभ्यता में पीपल का वृक्ष 'ब्रह्मतरू'[24] एवं शमी का वृक्ष 'जीवनतरू'[25] के रूप में पूज्यनीय थे। पीपल एवं शमी वृक्ष की अवधारणा जुड़वा वृक्ष के रूप में की गयी थी।[26] जो कि धार्मिक कृत्यों एवं संस्कारों में अत्यन्त उपयोगी माना गया था। सैन्धव सभ्यता के मुहरों पर पीपल, बबूल, नीम आदि वृक्षों उनकी पत्तियां, टहनियों एवं उनके बीच मानव आकृति अंकन होने का अध्ययन करके के0एन0 शास्त्री ने सर जॉन मार्शल मैके आदि विद्वानों को उद्धृत करते हुए एक पौराणिक वृक्ष गाथा प्रस्तुत की है, जिसका वर्णन वृक्ष–पूजा के विषय में महत्वपूर्ण है। के0एन0 शास्त्री के अनुसार सैन्धव सभ्यता के मुहरों पर पाये जाने वाले

शमी का पेड़ के आस–पास सिन्धु सभ्यता के देवी–देवता एवं राष्ट्रनायक की अनेक उपलब्धियों का चित्रांकन है। शास्त्री महोदय के अनुसार अलग–अलग मुहरों से प्राप्त कुछ प्रमाणों को संकलित करने पर एक वृक्ष गाथा उभरने लगती है। उनका कहना है कि देवी एवं देवता के बीच इस वृक्ष की शाखाओं को सिर पर लम्बी चोटी के रूप में पहनने के लिए इस पर अधिकार के लिए युद्ध हुआ।[27] मनुष्य या पशु के रूप में दानव जादुई पौधे या इनकी टहनियों को चुराने का लगातार प्रयास करते थे। मनुष्य के रूप में एक देवता द्वारा इस वृक्ष की मजबूत चौकीदारी की जाती थी, जो इसकी पत्तियों में व्याघ्र रूपधारी राक्षस की घात में छिपा बैठा रहता था।[28] इस तरह से शास्त्री महोदय ने एक मिश्रित पशुरूपधारी की तरह ध्यान आकर्षित किया है जिसका चेहरा मानव का है लेकिन यह सिर अलग–अलग जानवरों का मिला–जुला रूप है। इसकी ठुड्डी से हाथी के सूंड की तरह गोजर लटका है, इसकी श्रृंगे ब्राह्मणी साड़ों की जैसी है तथा शरीर का अग्रभाग भेड़ जैसा है एवं पृष्ठभाग व्याघ्र का है। इसकी पूंछ के स्थान पर पीछे से आक्रमण करने वाले की जल्दी मौत के घाट उतारने को तत्पर एक भयानक काला सर्प है। श्रृंगों, मस्तक और सूंड की तरह लटकते हुए गोजर के मिले–जुले रूप से जानवर के इस भाग को बिच्छु जैसा दर्शाने का उद्देश्य था। शास्त्री महोदय के अनुसार इस प्रकार का मिश्रित पशु जीवन–वृक्ष का सबसे उपर्युक्त रक्षक था।[29] के0एन0 शास्त्री के अनुसार मोहनजोदड़ों से प्राप्त दो मुहरों पर दैवीय वृक्ष की निगरानी करते हुए एक शरीर पर तीन मस्तक वाला जानवर दिखाया गया है।[30] मैके महोदय को मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मिट्टी की मुहर के एक स्थान पर एक बबूल के वृक्ष को साड़ द्वारा रक्षित चित्रांकित किया गया है।[31] के0एन0 शास्त्री के अनुसार एक मुद्रा पर जीवन–वृक्ष के एक पार्श्व पर साड़ को बवण्डर से लड़ता हुआ दिखाया गया है। इसका दूसरा पहलू मिश्रित जानवर को एक बड़े राक्षस अथवा व्याघ्र को ध्यान से देखता हुआ प्रदर्शित करता है जिसको उसने स्पष्ट रूप से संघर्ष में या मात्र घातक दृष्टि से मार डाला है। तीसरे पार्श्व में वृक्ष को तीन सिर वाले पशु को सुरक्षित दिखाया गया है जबकि देवता का घरेलू हिरन अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ टहनियों को चरता हुआ दिखाया गया है।[32] बबूल के वृक्ष की पूजा करते हुए मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मिट्टी की मुहर पर एक भक्त को दर्शाया गया है। यह भक्त यू आकार की कोई वस्तु वृक्ष को अर्पित करते हुए दिखाया गया है। पृष्ठ भाग पर नाग देवता बबूल के वृक्ष की रखवाली कर रहा है।[33] मोहनजोदड़ों से प्राप्त अन्य मुहर पर पूर्ण विकसित बबूल का पेड़ का चित्रांकन है, जिसका भैंस के मस्तक वाला कोई देवता रक्षा करता हुआ दिखाया गया है। देवता के समीप पवित्र सॉंड है, जिसके ऊपर वृक्ष की पूजा से सम्बन्धित कोई अनुष्ठान करता हुआ पुरोहित या सेवक छलांग लगा रहा है।[34] के0एन0 शास्त्री के अनुसार सैन्धव सभ्यता की मुहरों पर एक सामान्य पौराणिक दृश्य व्याघ्र राक्षस द्वारा वृक्ष या वृक्ष की शाखाओं को चुराने का प्रयास का है।[35] व्याघ्र राक्षस को जीवन–वृक्ष के नीचे खड़ा और वृक्षक देवता को मुड़कर देखता हुआ दिखाया गया है, जो शाखा पर पत्तियों में बैठा है।[36] मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मुहर पर बबूल के वृक्ष की दो कंटीली शाखाओं को श्रृंग रूप में धारण किये हुए अकेला व्याघ्र दर्शाया गया है।[37] मोहनजोदड़ों से प्राप्त तीन मुहरें है जो व्याघ्र एवं वृक्षात्मा को प्रदर्शित करने के अलावा वृक्ष गाथा से संबंधित कथा पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इसमें से एक मुहर पर एक तरफ उस मिश्रित पशु को दर्शाया गया है जो बबूल वृक्ष की तरफ पीठ किये खड़ा है। वृक्ष पर नीचे खड़े व्याघ्र को सम्मोहित करता हुआ वृक्षात्मा बैठा है उसके बाद फ्रेम में मढ़ा हुआ स्वस्तिक है एवं उससे सटे हुए वृक्ष की तरफ श्रद्धावनत हाथी है।[38] दूसरे पार्श्व में एकश्रृंगी पशु को दर्शाया गया है एवं इसके साथ ही अष्टकलीय चित्रलेख है। तीसरे पार्श्व में बिल्कुल बांयी तरफ की छोर पर मानव आकृति वाले बकरे को और बीच में नतमस्तक मानव के साथ अश्वस्थ के वृक्ष के देवता को फटे हुए अश्वस्थ के अन्दर खड़ा दर्शाया गया है। के0एन0 शास्त्री के अनुसार इस मुद्रा के तीनों पार्श्व पर स्थित दृश्य एक दूसरे के पूरक है और एक ही गाथा के अंग हैं। तीसरे पार्श्व पर स्थित अश्वस्थ देवता मुख्य देवता है एवं शेष दोनों पार्श्वों पर स्थित दृश्य इससे सम्बद्ध है।[39] एक श्रृंगी पशु अश्वस्थ के देवता से उसके वाहन या पालतू पशु के रूप में

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

संबंधित हो सकता है। इसका अर्थ यह है कि मिश्रित पशु द्वारा रक्षित बबूल का वृक्ष तथा वृक्षात्मा सैन्धव देवता के समूह के प्रमुख देवता के रूप में प्रतिष्ठित थे। छोटे देवता एवं देवसमप्राणी यथा पुरोहित आदि ही अपने मस्तक पर इसकी शखाओं को कलंगी या लम्बी चोटी के रूप में धारण करने के अधिकारी थे।[40] मोहनजोदड़ों की एक समपार्श्व मुहर[41] के एक पार्श्व पर व्याघ्र पीड़ा का दृश्य तथा पांच चित्रलिपियां अंकित है। द्वितीय पार्श्व पर बायें से दायें एक पंक्ति में तीन जानवर गैडा, हाथी एवं एक श्रृंगी अश्व पार्श्व में चित्रित बबूल वृक्ष की तरफ आगे बढ़ते हुए तथा अभिवादन करते हुए चित्रांकित है। अन्य पार्श्व पर दोनों तरफ पूर्ण विकसित बबूल के वृक्ष की शाखाओं को बकरे या हिरन चरते हुए दिखाये गये है और वृक्ष देवता को जमीन पर घुटनों के बल आधा झुका हुआ दर्शाता गया है। मोहनजोदड़ों को प्राप्त एक अन्य मुहर के एक पार्श्व के मुखपृष्ठ पर बांये से दांये एक आवृत्तपट है।[42] उसपर सामान्य रूप से पाया जाने वाला व्याघ्र पीड़ा का दृश्य है। साथ ही जीवन वृक्ष को उन्मूलित करने का हिम्मत करने वाले व्याघ्र के सिर पर दो मानव आक्रामकों को जकड़ लेने को उद्यत पूरी तरह से फैले हुए गोजर के हाथों को दर्शाया गया है। ऐसा लगता है कि जैसे ही आक्रामकों ने वृक्ष को उखाड़कर ले जाने की तैयारी की, वैसे ही वृक्ष अचानक दो भागों में विभाजित किया गया एवं उसके भीतर रहने वाला देवता अपराधियों को दण्डित करने के उद्देश्य से नाटकीय तरीके से प्रकट हो गया।[43] वृक्ष गाथाओं के बारे में मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मुहर अनेक जीवों का अनोखा सम्मिलित प्रदर्शित किया हैं। बीच में अपनी नाग जैसी पूंछ को हवा में सीधे ऊपर उठाये हुए मनुष्य की मुख आकृति वाला मिश्रित पशु खड़ा है, उसके सामने एक मृत व्याघ्र पड़ा है। दृश्य के दोनों तरफ दो बिच्छू है, इस दृश्य के साथ एक बबूल का वृक्ष भी है जिसकी पत्तों भरी टहनियां मिश्रित पशु के सामने धुधली सी प्रतीत होती है। गाथा दृश्य बहुत मिट गया है। फिर भी के0एन0 शास्त्री का अनुमान है कि मृत व्याघ्र टहनियां चराने के लिए बबूल–वृक्ष के पास बार–बार गया होगा, जिसे अभिरक्षक की भूमिका निभा रहे मिश्रित पशु ने दण्डित किया होगा। बिच्छुओं की उपस्थिति से ऐसा लगता है कि व्याघ्र–राक्षस के विरूद्ध युद्ध में उन्होंने भी भाग लिया होगा।[44] वृक्ष–गाथा के विषय में मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक समपार्श्व मुद्रा अपने तीनों पाश्वों पर मनोरंजन दृश्य प्रदर्शित करती है।[45] इसमें एक पार्श्व के बिल्कुल बाँयी तरफ एक बबूल को चर रहे है, जबकि दाँयी तरफ तीन सिरों वाला राक्षस इसकी निगरानी कर रहा है। अन्य दोनों पार्श्व वृक्ष को सम्मान प्रदान करने के निमित्त बांये से दाँयें बढ़ती जानवरों की पंक्ति चित्रित हैं। इसमें हाथी, गेंडा, तेन्दुआ, व्याघ्र, बकरा एक अस्पष्टत चौपाया अपने जबड़ों में मछली दबायें घड़ियाल, कछुआ तथा मछली हैं। ऐसा लगता है मानो सम्पूर्ण पशु–संसार वृक्ष की पूजा हेतु जाते हुए जुलूस में सम्मिलित हो गया हो और घड़ियाल वृक्ष–देवता की श्रद्धा में बलिदान करने हेतु जबड़ों में एक मछली दबा लाया हो। शाकाहारी एवं मासांहारी जानवरों का संगति में चलना पवित्र वृक्ष के प्रांगण में प्रसारित शांतिपूर्ण वातावरण का बोध कराता हुआ प्रतीत होता है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मिट्टी की मुहर का उल्लेख इस विषय में महत्वपूर्ण है।[46] यहां से प्राप्त मुहर के मुखभाग के बांयी तरफ ढाचें में स्वास्तिक चिन्ह के साथ एक बबूल का वृक्ष है और दांयी तरफ तीन चित्रांकित लेख है। शुभ चिन्ह होने के कारण स्वास्तिक का वृक्ष के साथ अंकन वृक्ष को किसी सम्भावित खतरे से अतिरिक्त सुरक्षा सुनिश्चित करने की दृष्टि से किया गया प्रतीत होता है। इस मुहर के पृष्ठ भाग पर सम्भवतः वृक्षवासी देवता के चढ़ावा के लिए अपने जबड़ों में एक मछली दबाये हुए घड़ियाल प्रदर्शित है। के0एन0 शास्त्री ने चन्हूदड़ों के उत्खनन में मैके महोदय द्वारा प्राप्त एक मुहर को वृक्ष–गाथा के विषय में महत्वपूर्ण माना है।[47] इसके ऊपरी भाग में जीवन वृक्ष तथा तीन चित्रलेख प्रदर्शित है। नीचे की तरफ अपनी जिह्वा बाहर किये एक व्याघ्र वृक्ष–देवता के चेहरे को लगभग स्पर्श करते हुए प्रदर्शित है। वृक्ष देवता अपनी विशेष मुद्रा में आधा झुका हुआ, एक हाथ कमर पर रखे हुए दूसरा बाघ की तरफ बढ़ाये हुए उसका उपहास करते हुए प्रदर्शित है। डॉ0 मैके के अनुसार बाघ उस आदमी का चेहरा चाट रहा है तथा आदमी बाघ से दया की याचना कर रहा है।[48] लेकिन के0एन0 शास्त्री महोदय के अनुसार मैके महोदय की व्याख्या

IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

Impact Factor: 5.731

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Volume 6, Issue 5, May 2026

वृक्ष–गाथा के विषय में उचित नहीं प्रतीत होती है। यहां आदमी बाघ का शिकार नहीं है लेकिन स्थिति इसके विपरीत है। शास्त्री महोदय के अनुसार बाघ को सम्मोहित करके निष्क्रिय बनाने के पश्चात देवता वृक्ष से नीचे उतरकर बाघ की जिह्वा चूसकर उसका प्राण लेने जा रहा है। वीरासन जैसी उसकी आधी झुकी हुई निर्भीक मुद्रा एवं उसकी मनोवृत्ति यह स्पष्ट करती है कि बाघ ही वृक्ष देवता का शिकार बन गया है।[49] वृक्ष की पूजा के विषय में के0एन0 शास्त्री द्वारा प्रस्तुत वृक्ष–गाथा सैन्धव लिपि के उद्वाचन न हो सकने की स्थिति में पूर्णरूप स्वीकार नहीं की जा सकती फिर भी यह गाथा इस आशय का प्रबल आधार प्रस्तुत करती है कि हड़प्पा कालीन संस्कृति में वृक्ष की पूजा किसी न किसी रूप में अवश्य ही लोकप्रिय थी। मैके महोदय को 1930 ई0 में मोहनजोदड़ों के उत्खनन से एक खण्डित चौकोर मुद्रा प्राप्त हुई है।[50] इस मुद्रा पर बाघ, हाथी, हिरण, गैंडा आदि जानवरों के बीच एक त्रिमुख आकृति योगासन मुद्रा में चित्रांकित है। आकृति के शीर्ष पर लम्बे मुड़े श्रृंग का मुकुट दर्शाया गया है। सर जॉन मार्शल महोदय इसे ऐतिहासिक शिव का आदि रूप मानते है।[51] के0एन0 शास्त्री महोदय इसे पौराणिक महिषासुर आख्यान से सम्बन्धित मानते है।[52] हर्वर्ट सिल्वा का विश्वास था कि यह चित्र नारी देवता का है, जो त्रिकोणीय शिरोभूषा धारण किये वानस्पतिक प्रजनन शक्ति प्रतीत होती है।[53] सैन्धव सभ्यता में वृक्ष पूजा के साथ पशु–पूजा, जल–पूजा, प्रती–पूजा भी पर्याप्त रूप से लोकप्रियता थी।[54] सैन्धव सभ्यता के समकालीन सभ्यता में मेसोपोटामिया की सभ्यता का घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध था वृक्ष की पूजा के प्रचलन तथा परवर्ती हिन्दू धर्म में वृक्षों पर देवताओं के निवास की मान्यता से भी इस निष्कर्ष को बल मिलता है कि सैन्धव सभ्यता के अन्तर्गत वृक्ष पूजा का बहुत प्रचलन था।

संदर्भ सूची

1. पिग्गट, स्टुअर्ट, प्री हिस्टारिक इण्डिया, पृ0 13
2. काला, सतीशचन्द्र, सिन्धु सभ्यता, पृ0 68
3. काला, सतीशचन्द्र, सिन्धु सभ्यता, पृ0 68
4. मार्शल, जॉन, मोहनजोदड़ों एण्ड इण्डस सिविलाइजेशन, जिल्द–1, पृ0 253
5. काला, सतीशचन्द्र, सिन्धु सभ्यता, पृ0 63
6. काला, सतीशचन्द्र, सिन्धु सभ्यता, पृ0 64
7. मार्शल, जान, मोहनजोदड़ो एण्ड इण्डस सिविलाइजेशन, पृ0 390
8. सर जॉन मार्शल, पृ0 63–64
9. मुखर्जी, राधाकुमुद, सिन्धु सभ्यता, पृ0 40
10. वत्स, माधो स्वरूप, एक्सवेशन्स एट हड़प्पा, जिल्द–1, पृ0 331
11. काला, सतीशचन्द्र, सिन्धु सभ्यता, पृ0 64
12. काला, सतीशचन्द्र, सिन्धु सभ्यता, पृ0 65
13. काला, सतीशचन्द्र, सिन्धु सभ्यता, पृ0 62
14. बनर्जी, जे0एन0 डेवलपमेंट ऑफ द हिन्दू आइकानोग्राफी प्लेट–7, फीगर 'बी'।
15. शास्त्री, के0एन0, न्यू लाइट ऑन द इण्डस सिविलाइजेशन, जिल्द–2, पृ0 120
16. शास्त्री के0एन0, न्यू लाइट ऑन द इण्डस सिविलाइजेशन, जिल्द–1, पृ0 25
17. शास्त्री के0एन0, न्यू लाइट ऑन द इण्डस सिविलाइजेशन, जिल्द–1, पृ0 25

18. शास्त्री के0एन0, न्यू लाइट ऑन द इण्डस सिविलाइजेशन, जिल्द–1, पृ0 25
19. शास्त्री के0एन0, न्यू लाइट ऑन द इण्डस सिविलाइजेशन, जिल्द–2, पृ0 120
20. प्रजापति : प्रजा : सृष्ट्वारिरिचानोऽमन्यत्। सोऽश्वो भूत्वा सम्वत्सरं न्यङ् भूम्यां शिरः प्रतिनिधायातिष्ठत् तस्योश्वत्थो मूर्ध्व उदभिनत। तदश्वत्थस्याश्चत्थत्वम्। – मैत्रायणी संहिता 1/68।
21. शास्त्री, के०एन०, न्यू लाइट आन द इण्डस सिविलाइजेशन, जिल्द–2, पृ० 36, द० सप्तश्वत्थमयूख अन्तर्वेदी शयीरन–मैत्रायणी संहिता 2/11
22. शास्त्री, के०एन०, तत्रैव, जिल्द–2, पृ० 37
23. मैंके, ई०, एक्सवेशन्स एट चन्हूदड़ो, पृ० 36
24. शास्त्री, के०एन०, तत्रैव, वाल्यूम–1, पृ० 20
'ब्रह्मतरु' के अतिरिक्त अश्वत्थ वृक्ष को सृष्टि–वृक्ष के रूप में भी प्रतिष्ठा प्राप्त थी।
25. तत्रैव, वाल्यूम–2, पृ० 109
26. तत्रैव
27. तत्रैव, वाल्यूम–1, पृ० 26
28. तत्रैव
29. तत्रैव, पृ० 27
30. तत्रैव
31. मैके, ई०, फर्दर एक्सवेशन्स, वाल्यूम–2, प्लेट–ब्ं, 4 ए
32. शास्त्री, के०एन०, तत्रैव, वाल्यूम–1, पृ० 37
33. मैके, ई०, फर्दर एक्सवेशन्स, वाल्यूम–2, प्लेट–ब्ं, 6 बी
34. तत्रैव, प्लेट ब्प्प्, 8
35. शास्त्री, के०एन०, तत्रैव, वाल्यूम–1, पृ० 29
36. मैके, ई०, तत्रैव, वाल्यूम–2, प्लेट–ब्टप्, 522
37. मैके, ई०, फर्दर एक्सवेशन्स, वाल्यूम– प्प्, प्लेट स्ग्ग्प्, 360
38. मैके, ई०, फर्दर एक्सवेशन्स, वाल्यूम प्प्, प्लेट स्ग्ग्प्, 1
39. शास्त्री, के०, एन०, न्यू लाइट आन द इण्डस सिविलाइजेशन, वाल्यूम–1, पृ० 30
40. शास्त्री, के०एन०, तत्रैव, वाल्यूम–1, पृ० 31
41. मैके, ई०, फर्दर इक्सवेशन्स, वाल्यूम प्प्, प्लेट ग्ब्, 13
42. तत्रैव, वाल्यूम– प्प्, प्लेट ग्ब् 23
43. शास्त्री, के० एन०, न्यू लाइट आन द इण्डस सिविलाइजेशन, वाल्यूम–1, पृ० 31
44. शास्त्री, के०एन०, न्यू लाइट आन द इण्डस सिविलाइजेशन, वाल्यूम– 1, पृ० 32
45. मार्शल, जान, मोहनजोदड़ो एण्ड द इण्डस वैली सिविलाइजेशन, वाल्यूम–प्प्, प्लेट ब्टप्, पृ० 14
46. मार्शल, जॉन, मोहनजोदड़ो एण्ड इण्डस वैली सिविलाइजेशन, वाल्यूम–प्प्, प्लेट ब्टप्, पृ० 201
47. मैके, ई०, चन्हूदड़ो इक्सवेशन्स, प्लेट स1, पृ० 181

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 6, Issue 5, May 2026

48. शास्त्री, के० एन०, न्यू लाइट आन द इण्डस सिविलाइजेशन, वाल्यूम– 1, पृ० 33
49. शास्त्री, के० एन०, न्यू लाइट आन द इण्डस सिविलाइजेशन, वाल्यूम– 1, पृ० 33
50. मैके, ई०, फर्दर इक्सवेशन्स एट मोहनजोदडों, वाल्यूम–1, प्लेट ग्ब्ट, पृ० 420
51. तत्रैव, वाल्यूम–1, पृ० 53–56
52. शास्त्री, के०एन०, न्यू लाइट आन द इण्डस सिविलाइजेशन, वाल्यूम– 1. पृ० 12–13
53. सिल्वा, हर्वर्ट पी०, ए रि इक्जामिनेशन आफ द रिलिजन आफ द इण्डस सिविलाइजेशन–हिस्ट्री आफ रिलिजन्स, वाल्यूम–चार नं० 1 (1964), पृ० 115–251
54. मुकर्जी, राधाकुमुद, हिन्दू सभ्यता, पृ० 25